(५) दिन आयो दिन आयो...

दिना आयो–दिन आयो–दिन आयो,
आज जन्मकल्याणक दिन आयो, ॥ टेक ॥

झूमे आज नर–नारी ऐसे हरषाय,
मारो तन मनवा प्रभु के गुण गाये;
रङ्ग लाग्यो – रङ्ग लाग्यो – रङ्ग लाग्यो,
थारी भक्ति में म्हारों प्रभु रङ्ग लाग्यो ॥ 1 ॥

तन भीगे, मन भीगे, भीगे मोरो आतम,
प्रभु ने बतायो आतम परमातम;
रङ्ग लाग्यो – रङ्ग लाग्यो – रङ्ग लाग्यो,
थारी भक्ति में म्हारों प्रभु रङ्ग लाग्यो ॥ 2 ॥

सोलह सपने माँ ने देखे,
उनका फल राजा से पूछा;
रानी तेरे गर्भ से पुत्र जन्म लेगा,
तीन लोक का नाथ बनेगा।
हरषायो हरषायो हरषायो माता
शिवादेवी का मन हरषायो ॥ 3 ॥

सौरीपुर में जन्म हुआ है तीन भुवन आनन्द हुआ है;
इन्द्र–इन्द्राणी मिल खुशियाँ मनावें,
मङ्गलकारी गीत सुनावें।
फल पायो फल पायो फल पायो
शिवादेवी माता ने शुभ फल पायो ॥ 4 ॥